12|5|20 विषय - हिन्दी, नाम - डॉ॰ साधना कुमारी  Time - 10:30 - 11

Khani: Kano me Kangana L.1

## कानों में कंगना

(लेखक परिचय)

साहित्यशैलीसम्राट राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह की अद्भुत कालजयी कहानी है: 'कानों में कंगना'। यह कहानी सन 1913 में प्रकाशित हुई। कथा लेखन में अपनी अत्यन्त प्रभावी शैली के कारण हिन्दी कथा साहित्य में शैली-सम्राट के रूप में स्मरण किये जाते हैं। कहानी किस प्रकार पाठकों को आरंभ से अंत तक पढ़ने के लिए विवश कर सकती है, इस शिल्प को वे जान गए थे। इसीलिए वे अपने समय के सबसे लोकप्रिय कहानीकार सिद्ध हुए। (10 सितंबर, 1890 - 24 मार्च 1971) इनका जन्म बिहार के शाहाबाद के सूर्यपुरा नामक स्थान पर प्रसिद्ध जमींदार राजा राजेश्वरी सिंह प्यारे के यहाँ हुआ था। आरम्भिक शिक्षा घर पर हुई। 1907 में आरा जिला स्कूल से इन्ट्रेन्स, 1909-1910 में सेन्ट जेवियर्स कॉलेज, कोलकाता से एफ॰ए॰ 1912 में प्रयाग विश्वविद्यालय से बी॰ए॰ 1914 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम॰ए॰ (इतिहास) की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। इन्होंने पचास (50) वर्षों तक हिन्दी साहित्य की महनीय सेवा की।

वन में कुटी बना कर रहने वाले की पुत्री है। वह वनफूलों की तरह सुन्दर, सरल, सहज और सौन्दर्य से युक्त। जैसे वनफूल प्रकृति में ~~स्वाभाविक~~ स्वाभाविक रूप से मुकुलित और पल्लवित होते हैं। विद्या अध्ययन हेतु नरेन्द्र कोई साल भर से योगेश्वर की कुटी में आना-जाना था। इसी क्रम में वनकन्या किरन पर अनुरक्त हुए। अनुराग भाव से कहानी प्रारंभ होती है — 'किरन' तुम्हारे कानों में यह क्या है? उसने कानों से चंचल लट को हटाकर कहा — कंगना। अरे, कानों में कंगना? हाँ - तब कहाँ पहनूँ? मैंने चटपट उसके कानों से कंगना उतार लिया, फिर धीरे-धीरे उसकी अंगुलियों पर बदने लगा। न जाने इस घड़ी कैसी खलबली थी, मुँह से अचानक निकल आया — किरन। आज की घटना मुझे मरते दम तक न भूलेगी यह भीतर तक पैठ गई। प्रेम बेली बढ़ी, लेकिन इस रूप में वनफूल उद्यानों में जा पहुँची। कहानी के प्रारंभ में जो प्रकृति का सुन्दर और सजीव चित्र अंकित है, वह अद्वितीय तथा उसी के मध्य प्रेमव्यापार का विकास भी अनुपम है। कहानी के मध्य भाग में परिवर्तन स्पष्ट है, क्योंकि यहीं से इसकी गति बदल जाती है। अर्थात कल्पना के संसार से कहानीकार हमें यथार्थ जगत में ले जाता है। यह यथार्थ जगत सभ्यता का संसार है, जहाँ विषयवासना का नंगा नाच परिलक्षित होता रहता है।

दूसरे दिन योगेश्वर गद्गद् स्वर से बोले — "नरेन्द्र! अब मैं चला, किरन तुम्हारे हवाले है।"